473वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 40 | षष्ठम् अंक | जनवरी 2018

इस अंक में...

11 सम्पादकीय
12 राष्ट्रीय घटनाक्रम
21 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
33 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
39 नवीनतम सामान्य ज्ञान
45 राज्य समाचार
46 रोजगार समाचार
48 खेलकूद
54 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
57 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
59 स्मरणीय तथ्य
61 युवा प्रतिभाएं
71 फोकस—बुनियादी 'स्वच्छता' तक पहुँच : कितनी पास कितनी दूर
74 विश्व परिदृश्य
79 बैंकिंग लेख—वाणिज्यिक बैंकों का विलय एवं अधिग्रहण : संदर्भ एवं सम्भावनाएं
82 ऐतिहासिक लेख—मुगलकालीन कला एवं स्थापत्य
84 औद्योगिक लेख—भारतीय औद्योगिक नगरों की ऐतिहासिकता
86 भौगोलिक लेख—वातावरण में गैसीय एवं अवसादी चक्र
89 साहित्यिक लेख—हिन्दी का विकास एवं इसका वैश्वीकरण
91 डेयरी सम्बन्धी लेख—दुग्ध व्यवसाय : गरीबी उन्मूलन का एक सशक्त माध्यम
93 पर्यावरण लेख—संदर्भ-कनाडा की स्लिम्स नदी का सूखना एवं गंगा को खतरा
94 रेल मैत्री लेख—पड़ोसी देशों के साथ मित्रता बढ़ाती रेलगाड़ियाँ
96 कृषि लेख—पर्यावरण परिवर्तन और प्रभावित होती कृषि उत्पादकता
100 जागरूकता लेख—सामाजिक और आर्थिक आन्दोलन
103 सार संग्रह

वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन

108 (i) राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं नौसेना अकादमी परीक्षा, 2017
114 (ii) आर.बी.आई. ग्रेड 'बी' अधिकारी परीक्षा (प्रथम चरण), 2017
120 (iii) नवोदय विद्यालय समिति टी.जी.टी. परीक्षा, 2016
124 (iv) मध्य प्रदश बी.ए., बी.एड./बी.एस-सी., बी.एड./बी.एल.एड. (चार वर्षीय पाठ्यक्रम) प्रवेश परीक्षा, 2017
129 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
131 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
133 ऐच्छिक विषय—इतिहास—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
140 विविध जानकारी—वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं
143 तर्कशक्ति एवं डाटा इन्टरप्रिटेशन—एस.बी.आई. (एस.ओ.) परीक्षा, 2017
149 गणितीय अभियोग्यता—आर. बी. आई. ग्रेड 'बी' अधिकारी परीक्षा (प्रथम चरण), 2017
154 अपना ज्ञान बढ़ाइए
155 क्या आप जानते हैं ?
156 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—सूचना प्रौद्योगिकी के युग में संयुक्त परिवार
158 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-462 का परिणाम
159 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—लोकतन्त्र में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता निरपेक्ष है
161 अर्द्धवार्षिकांक

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सम्पादकीय

अपनी उपेक्षा करना बन्द कीजिए

"Eat like you love yourself
Move like you love yourself
Speak like you love yourself
Act like you love yourself."

धुलाई के लिए कोट देते समय उसके कान में किसी की आवाज आई–कोट की जेबें देख लो, किसी जेब में कुछ रखा न हो ''नहीं, इसमें कुछ नहीं हो सकता, मैंने इसे अभी-अभी सन्दूक में से निकाला है'' तर्क देकर उसने अपने मन को झटक दिया अगले दिन उसको ध्यान आया कि कोट को बक्से से बाहर निकालते समय उसके हाथ में अमुक कागज था वह कहीं गिर न जाए. इस कारण उसने उस कागज को कोट की सामने वाली जेब में रख दिया था. समस्त प्रयास करने के बाद भी कागज नहीं मिल सका.

यह आवाज किसकी थी ? यह आवाज स्वयं उसी की थी जिसे उसके कानों ने नहीं, उसके मन ने सुना था हम सब उसे सुनते हैं, उसकी उपेक्षा करते हैं और दुःख पाते हैं.

महान् दार्शनिक सोफोक्लीज के मतानुसार ''कोई साक्षी इतना विकट और इतना शक्तिशाली नहीं है, जितना अपना अन्तःकरण, अपना अन्तर मन'' यह वह शक्ति है, जो हमारे मन-मस्तिष्क का मार्गदर्शन करती है, परन्तु हम उसकी उपेक्षा करते रहते हैं. मन में, अपने भीतर काम करने वाली इस शक्ति को दर्शन की भाषा में अन्तःकरण और लोक की भाषा में अन्दर की आवाज, भीतरला कहते हैं. जब भी हम कोई गलत कदम उठाते हैं, अनुचित, लोक विरुद्ध एवं अपने हित के विरुद्ध काम करने को उद्यत होते हैं. यह हमें सावधान करती है, हमारे मन में एक प्रकार की झिझक पैदा करती है. हम उसकी उपेक्षा कर देते हैं. जो इसके अनुसार आचरण करते हैं, वे भाग्य-शाली होते हैं, वे ही सफलता और शक्ति के अधिकारी बनते हैं.

महात्मा गांधी प्रायः कहा करते थे कि मैं अपनी आत्मा की आवाज के अनुसार कार्य करता हूँ. उनकी सुनिश्चित मान्यता थी कि अन्तर की आवाज कभी गलत नहीं होती है. ''अन्तःकरण के मामले में बहुमत के नियम का कोई स्थान नहीं होता है.'' जैसे वासनाएं देह की वाणी हैं. वैसे ही अन्तःकरण आत्मा की वाणी है. यदि वे एक-दूसरे का खण्डन करती हैं, तो इसमें आश्चर्य की बात क्या है ? ऐसा करते हुए महात्माजी ने क्या प्राप्त किया, क्या प्राप्त नहीं किया ? इसे समस्त विश्व जानता है. एक सामान्य बालक मोहनदास ने विश्वबन्धु बापू का पद प्राप्त कर लिया. जब भारतीय स्वतन्त्रता का आन्दोलन पूर्ण प्रकर्ष पर था. उस समय चौरी-चौरा में हत्याकाण्ड का समाचार पाकर गांधीजी ने अन्दर की आवाज के नाम पर आन्दोलन एकदम वापस ले लिया था. उन्हीं महात्मा गांधी ने सन् 1942 में अंग्रेज भारत छोड़ो, भारतवासी जियो या मरो का नारा दिया था. कहने की आवश्यकता नहीं है कि भविष्य ने सिद्ध कर दिया कि उनके उक्त दोनों निर्णय उपयुक्त थे. कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे भीतर से आने वाली आवाज सदा सही मार्गदर्शन करती है. उसने आपको मार्गदर्शन किया होगा, आपसे कहा होगा–आप अमुक अवसर पर अमुक विषय लें, अमुक प्रकार से परीक्षा की तैयारी करें, अमुक स्थान पर, मेले में, तमाशे में, यारवासी में न जाएं. इतना ही नहीं, उसने यह भी कहा होगा–आप अमुक प्रतियोगिता में भाग लें. आप स्वयं विचार कर लें कि आपने उसके अनुसार क्या किया है और क्या नहीं किया है ?